Tender Heart High School, Sector - 33-B, Chandigarh

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 1 'संस्कार और भावना' लेखक - विष्णु प्रभाकर

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या-पाँच पर दिए पाठ - 1 'संस्कार और भावना' के शेष भाग को पढ़ेंगे।

बच्चो ! पिछले सप्ताह हमने इस एकांकी को पृष्ठ संख्या नौ तक ही समझा था। आज इस एकांकी को आगे बढ़ाते हुए अगले कुछ और पृष्ठों को भी समझेंगे लेकिन आगे बढ़ने से पहले पिछले पृष्ठों के बारे में संक्षेप में समझ लेते हैं। माँ को कुमार की मिसरानी से पता चला कि उसका बेटा अविनाश जो अपनी बहू के साथ अलग रहता है, वह पिछले महीने बहुत बीमार रहा और मरते - मरते बचा। मिसरानी से माँ को यह भी पता चला कि अविनाश की बहू ने अपने प्राण देकर अविनाश को बचा लिया। वह अकेली थी परन्तु किसी के आगे हाथ पसारने नहीं गई। हैजा होने की बात सुनकर उमा आश्चर्यपूर्वक कहती है कि अतुल को भी इसकी जानकारी नहीं हुई, उमा की यह बात सुनकर माँ कहती है कि यदि उसे पता भी होता, तो वह उन्हें न बताता क्योंकि वह अपने बेटों को अच्छी तरह जानती है। माँ के अनुसार उनके दोनों पुत्र भावरहित हैं। उनके लिए देश, धर्म और कर्त्तव्य भावनाओं से अधिक महत्त्वपूर्ण है। इनके

पिता भी इसी प्रकार निर्मम थे। माँ, उमा को बताती है कि बचपन में अतुल की बहुत तबीयत खराब हो गई थी, तो इसके पिता अतुल को धरती पर लिटाने के लिए सामान हटाने लगे थे, जिसे देखकर सब आश्चर्यचकित हो गए थे। माँ ने यह भी बताया कि उसके भावुक होने की उन्होंने सदैव निंदा की है।

उमा माँ की बातें सुनकर सारा दोष अविनाश की पत्नी का बताती है। वह उनके भोली मुस्कुराहट तथा रूप के बारे में माँ को बताती है। माँ के यह पूछने पर कि तुमने अविनाश की बहू को देखा है तो उमा बताती है कि एक दिन आपको दुःखी देखकर मैं उनके पास गई थी वह अविनाश की बहू को समझाने गई थी लेकिन उसके हृदय में उसे देखकर गुणवान, रूपवती, संस्कारी, स्नेहशील तथा कोमल हृदया नारी की छवि अंकित हुई और वह बिना कुछ कहे वहाँ से लौट आई।

बच्चो! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए पृष्ठ संख्या दस से आरंभ करते हैं। उमा अपनी जेठानी से मिलने अपनी सास को बिना बताए गई थी। उमा की जेठानी अपने पति अविनाश के साथ अपनी सास और अन्य लोगों से अलग रह रही है। वह बंगाली समाज से संबंध रखती है। अलग जाति की होने के कारण उसे अविनाश की माँ स्वीकार नहीं करती। अविनाश की माँ की दृष्टि में अविनाश और उनके बीच दूरी पैदा करने वाली अविनाश की पत्नी है। वह इसी मानसिकता में जी रही है। वह इसके लिए स्वयं को दोषी नहीं मानती। उमा अविनाश की पत्नी को समझाते हुए कहती है कि माँ-बेटे से बढ़कर कोई संबंध नहीं है। पति को दुःखी करके वह किसी और को सुखी करने की कल्पना भी कैसे कर सकती है। यदि एक स्त्री ऐसा करती है तो वह पापिन है।

भारतीय संस्कृति एवं समाज में पत्नी का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वह समाज की उपस्थिति में अपने पति के साथ वैवाहिक बंधन में बँधती है। इस पवित्र बंधन का साथी उसका हृदय भी होता है। वह अपने पति के कहने पर अपने प्राण भी दे सकती है। वह अपने पति को किसी भी दशा में दुःखी करके किसी और को सुख नहीं दे सकती है। अपने पति से वह अगाध (गहरा / अथाह) लगाव रखती है। अविनाश की पत्नी भी भारतीय नारी की सच्ची प्रतिनिधि है। उसके आचार - विचार और व्यवहार में भारतीयता झलकती है। वह अपने पति अविनाश से सच्चा प्रेम ही नहीं करती बल्कि संकट के समय उसका साथ भी देती है। वह हैजा से पीड़ित पति के लिए दवा लाने, उसकी देखभाल करने जैसे काम के लिए वह दिन-रात एक कर देती है और उसे मरने से बचाती है।

वह स्वाभिमानिनी है। पति की बीमारी की दशा में भी वह किसी के सामने हाथ नहीं पसारती। उमा जब भाभी (अविनाश की पत्नी) से कहती है कि दोष तुम्हारा नहीं है तो किसका है? तुम न चाहती तो बड़े भैया (अविनाश) माँ को कैसे छोड़ देते? तुम अब भी चाहो तो सब कुछ ठीक हो सकता है। तब बड़ी बहू (अविनाश की पत्नी) ने उमा को बताया कि अतुल हमारे यहाँ आता है। वह भाई के पास नहीं बल्कि दफ़्तर के काम से आता है। उमा को भाभी से यह भी पता चला कि अतुल ने उन्हें बताया था कि तुम उससे बहुत प्यार करती हो। उमा माँ को बता रही है कि जब उसने अविनाश की पत्नी से यह कहा कि उसने अविनाश से विवाह करके अच्छा नहीं किया, एक बेटे को उसकी माँ से अलग कर दिया। तब अविनाश की पत्नी ने स्वयं को सही

ठहराते हुए उमा से कहा कि मेरी तरह तुम भी अपने पति से बहुत प्रेम करती हो लेकिन यदि यह कहें कि तुम्हारे विचार से माँ नाराज़ हैं तो क्या तुम अपने पति अतुल को छोड़ दोगी यदि नहीं तो वह भी (अविनाश की पत्नी) अपने पति को कभी नहीं छोड़ सकती। इस प्रकार अविनाश की पत्नी ने अपनी बात पूरी करके ही दम लिया।

बड़ी बहू की बातों से उमा का अन्तर्मन काँपने लगा। उमा उन्हें देखती तो जैसे मायूसी छा जाती थी। उमा का मन बड़ी बहू के व्यवहार से प्रभावित हो रहा था। उसकी दशा मोहग्रस्त व्यक्ति के समान थी जो होकर भी नहीं होता। अर्थात् अविनाश की पत्नी की बातें उसे प्रभावित कर रही थी, जिसे वह झुठला नहीं पा रही थी। अतः उमा बड़ी बहू के रोकने पर भी वहाँ न ठहर सकी।

उमा इस बात को लेकर झगड़ने आई थी कि माँ उससे बहुत अप्रसन्न हैं क्योंकि एक तो विजातीय होकर उसने अविनाश से विवाह कर लिया और बाद में एक माँ से उसका बेटा अलग कर दिया। इस पर अविनाश की पत्नी अनेक तर्क देती है जिन्हें सुनकर उमा तिलमिला जाती है और उन्हें चुप हो जाने को कहती है तब अविनाश की पत्नी उमा को कहती है कि इन सब बातों को छोड़ो, अब इन बातों को दोहराने से कोई फायदा नहीं होगा, पहली बार आई हो इसलिए चलो, अंदर चलकर बैठें।

उमा जिस बात को अपनी भाभी से मनवाना चाहती थी। उसी को करने के लिए वह स्वयं तैयार नहीं होती। जब उसकी भाभी उससे पूछती है कि क्या तुम अपने पति को छोड़ दोगी तो उसका जवाब नकारात्मक होता है। भाभी द्वारा अन्दर चलने के लिए कहने पर उसका अन्तर्मन काँप उठता है। वह भाभी को देखकर अपना अस्तित्व भूल जाती है और सम्मोहित - सी हो उठती है।

उमा स्वयं को असहाय मान वहाँ ठहर न सकी। बड़ी बहू उमा को पुकारती ही रह गई।

चेतन अवस्था में व्यक्ति अपनी बुद्धिमता से अपने हित-अहित, लाभ-हानि का आकलन करता है लेकिन अचेतन अवस्था में व्यक्ति केवल अपनी भावनाओं से संचालित (चलाया हुआ) होता है। वे भावनाएँ जिनके द्वारा वे एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। जिनमें वे हित-अहित, लाभ-हानि का आकलन नहीं करते इसलिए माँ ने कहा कि चेतन से अचेतन अधिक शक्तिशाली है।

असल बात तो रक्त के खिंचाव की थी क्योंकि उन्हें (माँ) पता चलता है कि अतुल व छोटी बहू (उमा) भी अविनाश और उसकी पत्नी से मिल चुके हैं। माँ कहती हैं भले ही अतुल दफ़्तर के काम से और उमा माँ के दुःख की वजह से मिले हो। इसके विपरीत माँ को अपने ही बेटे-बहू के दुःख-सुख का समाचार मिसरानी जैसों से मिलता है। इसके पीछे उनका आपसी प्रेम अर्थात् लगाव था। रक्त का खिंचाव इतना प्रभावशाली होता है कि वह अपनों को खींच ही लेता है।

संस्कारों में बँधी होने के कारण माँ चाहकर भी बहू-बेटे से मिल नहीं सकती थी। माँ उन संस्कारों की दासता की बात कर रही हैं, जिसके कारण वह अपनी विजातीय बहू को अपना नहीं सकी थी। वह अपने रूढ़िवादी संस्कारों से चिपकी हुई थीं।

बच्चो! आज हम इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। सभी छात्र इस एकांकी को पृष्ठ संख्या ग्यारह तक पढ़ेंगे तथा समझेंगे। सभी का इस एकांकी को पृष्ठ संख्या ग्यारह तक दो बार पढ़ना अनिवार्य है।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"हाँ, बहुत भोली, माता जी ! बहुत प्यारी ! जो एक बार देख लेता है, वह फिर उस रूप को नहीं भुला सकता । बार-बार देखने को मन करता है।"

(i) उपर्युक्त पंक्तियों में किसके बारे में बात की जा रही है ? उसके व्यक्तित्व एवं चरित्र की विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।
(ii) उमा अविनाश की बहू के घर क्यों और कब गई थी ?
(iii) उमा की बात सुनकर माँ की क्या प्रतिक्रिया हुई ?
(iv) उमा ने अविनाश की पत्नी को क्या सुझाव दिया था?

धन्यवाद ।

[अंतिम पृष्ठ]